NJESR/December-2022/Volume-4/Issue-12 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.12.81-84

" अन्तर पीढ़ी संघर्ष एवं वृद्ध लोगों की समस्याऐं"

डॉ. मनीराम मीणा (सहा0 आचार्य समाजशास्त्र)
से.म.बि. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नाथद्वारा (राज.)

(Received : 10 November 2022/Revised : 20 November 2022/Accepted : 28 December 2022/Published : 29 December 2022)

सार : समाज में जब दो या अधिक पीढ़ी के विचारों में मतभेद रोकटोक, असामंजस्यता उत्पन्न होने लगती है, परिवार टूटने लगते हैं। चाहे वो कोई भी धर्म या जाति के लोग हो! वर्तमान समय में संयुक्त परिवार जैसे जैसे टूटते जा रहे हैं। या संयुक्त परिवारों का विघटन या पतन होता जा रहा है। वृद्ध लोगों की समस्याऐं बढ़ती जा रही है। जो भयंकर समस्या एवं चिन्ता का विषय है। किस कारण से समस्या उत्पन्न हो रही है। वृद्ध लोगों की देखभाल की व्यवस्था में कमी क्यों आती जा रही है ? उनके समाधान की क्या व्यवस्था हो सकती है। क्या माता–पिता जो वृद्ध है। उनकी सेवा उनकी संतान नहीं कर रही है। वृद्ध लोगों के खान पान, स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। बहुत से सवाल उठते जाते हैं। यह एक गम्भीर और चिन्ताजनक समस्या उभरती जा रही है। नव पीढ़ी एवं बच्चों के साथ विचारों की भिन्नता, रोक टोक भी वृद्ध लोगों को तनाव और चिन्ता का मुख्य कारण बनता जा रहा है।

संकेत शब्द : अन्तरपीढ़ी संघर्ष, असामंजस्यता, परिवार, वृद्ध माता–पिता, स्वास्थ्य

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में, वृद्ध लोगों के साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या सदियों से रही है। क्योंकि हमेशा ही बच्चे एवं किशोर अवस्था वाले अपने माता–पिता पर निर्भर रहता आया है। V.P. Sharma (2005)[1] आज नई पीढ़ी में यह धारणा बन गई है कि बच्चे अपने पैरों पर खड़ा हो सके, उसके लिए माता – पिता भी अपने बच्चों का लालन पालन पोषण अच्छी तरह करके उचित शिक्षा दिलाते हैं और अधिकतर होनहार संतान उसमें सफल होकर अपना व्यवसाय, नौकरी काम धन्धा खुद करने लग जाते हैं और माता – पिता की बढ़ती उम्र के कारण बच्चे भी

कहीं अन्य शहर में अपना व्यवसाय नौकरी धन्धा पानी करने के उद्देश्य से चले जाते हैं और बुजुर्ग माता – पिता की बढ़ती उम्र के साथ उनका स्वाथ्य सही नहीं रहने लगता है। समय पर खाना नहीं मिलना देखभाल नहीं होना घुटनों का बढ़ता दर्द, आंखों की रोशनी कम हो जाना, सुगर, बीपी, घुटनों का दर्द, आंखों की परेशानी, शारीरिक कमजोरी, बार–बार बीमार होना, अनेक प्रकार के रोग उभरने लग जाते हैं। जिससे उनकी समस्याऐं बढ़ती जाती है। माता–पिता व परिवार से सम्बन्धों में खटास भी बढ़ती जा रही है। इसमें बच्चे और वृद्ध दोनों पीढ़ीयों का दोष सामने आता है। क्योंकि माता– पिता भी बच्चों की आयु के साथ अपनी विचारधाराओं में सामंजस्य नहीं कर पाते हैं।

माता–पिता एवं किशोर बच्चों के बीच होने वाले असामजंस्यपूर्ण व्यवहार एवं संघर्ष की सम्पूर्ण जिम्मेदारी केवल माता–पिता एवं बुजुर्ग माता–पिता पर ही नहीं डाल सकते हैं। अधिकतर देखने में एवं सर्वे में पाया गया है कि नई पीढ़ी गैर जिम्मेदार एवं अनिश्चित व्यवहार करने वाली पायी गई है और ऐसे वक्त माता पिता की कड़ी परीक्षा हो जाती है। सर्वे में पाया गया कि माता – पिता पर भाई बहिन भी बुजुर्ग माता पिता के साथ अनुकूल व्यवहार नहीं करते हैं। बुजुर्ग माता पिता की रोक टोक को भी पसन्द नहीं करते हैं और उनके ऊपर घुसा करते हैं। जो वृद्ध माता पिताओं को अच्छा नहीं लगता है। K.P. Kumaran (2010)[2] सभी वृद्ध माता पिता स्वयं को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। लेकिन नई पीढ़ी को वह अच्छा नहीं लगता और विरोध करना आम बात होती जा रही है। युवा वर्ग मित्रों में विश्वास करना, घर से बाहर रहना, फिजूल खर्चा करना मनोरंजन के नये–नये तरीके साधन, आधुनिक फैशन के कपड़े पहनना, घुमना फिरना आदि रोक टोक युवा पीढ़ी को अच्छी नहीं लगती है। वृद्ध लोगों की विचार धारा से अलग होने के कारण आसमजस्यता बढ़ती जाती है। जिसके कारण तनाव और चिन्ता में जीवन जीते हैं और चिन्ता के कारण स्वास्थ्य भी और बिगड़ता जाता है। हाई बी.पी., अटैक की भी संभावना रहती है।

आज की नई पीढ़ी एवं युवा वर्ग चाहता है कि उनकी जिन्दगी में किसी प्रकार का हस्तक्षेप एवं रोक टोक नहीं हो। दो पीढ़ीयों सोच में विरोधाभास एवं टकराव अन्तर पीढ़ी संघर्ष एवं टकराव की स्थिति उत्पन्न करता है। जो भारतीय

समाज में यह स्थिति घर, परिवार, वर्ग एवं समाज में देखी जा सकती है। इसका समाधान दोनों पीढ़ीयों को अपनी सोच एवं विचारों में परिवर्तन करने से कम किया जा सकता है। परिवार में बड़े, बुजुर्ग एवं वृद्ध माता पिता को विशेष रूप से उनके साथ प्यार प्रेम आत्मीयता व सहानुभूति की भावना अपनानी चाहिए और छोटी युवा पीढ़ी उनके मान सम्मान एवं देखभाल का पूरा ध्यान रखें तो समाधान हो सकता है एवं विचारों भिन्नता, रोक टोक आजकल पसन्द नहीं करते जिसके कारण भी समस्याऐं उत्पन्न होती जा रही है।

वृद्ध लोगों की समस्याऐं : M.L. Gupta & D.D. Sharma (2001)[3]यदि हम पीढ़ियों के संघर्ष पर ध्यान देवें तो पता चलता हे कि वृद्ध लोगों के सामने अनेक प्रकार के संघर्ष देखने को मिलते हैं। भारतीय समाज में तो वृद्ध लोागें की स्थिति बहुत ही दुःख भरी चिन्ताजनक एवं कष्टमय स्थिति है। कई दशकों से वृद्ध लोगों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है और वृद्ध होना ही अपने आप में एक समस्या और संघर्ष है और जब वृद्ध लोगों के पास आपका कोई साधन नहीं होता है। समस्या और बढ़ जाती है क्योंकि बिना आय वाले वृद्ध माता पिताओं को समय पर भोजन भी नहीं देते हैं और नहीं देखभाल करते हैं। बीमार होने पर इलाज भी नहीं करवा पाते हैं। जिसके कारण बुढ़ापे में संकट ही संकट एवं समस्या रहती है। लेकिन वे वृद्ध माता पिता वृद्ध लोग जो सरकारी सेवा में थे। उनकी पैंशन आने के कारण उनकी सन्तान भी उनकी अच्छी देखभाल एवं सार संभाल करती रहती है। इलाज भी अच्छा करवा लेते हैं और घर वाले पेंशन के लालच में अच्छी सेवा करते है। उनकी सोच यह हो जाती है कि जब तक वृद्ध माता पिता जीवित रहेंगे पैंशन आती रहेगी। जिससे घर परिवार भी चलता रहेगा। लेकिन बिना पेंशन वाले बुजुर्ग माता पिताओं का कोई धणी धोरी नहीं है। जो बहुत चिन्ताजनक समस्या है। भारत में 60 वर्ष से अधिक लोगों को वृद्ध लोगों की श्रेणी में माना जाता है। जबकि विकसित देशों में 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की वृद्ध मात्र सम्मानीय भाषा में उनसे व्यवहार किया जाता है। उनको वृद्ध, वयोवृद्ध, बुजुर्ग, वरिष्ठ नागरिग, जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। अवश्य असामंजस्यता की स्थिति खत्म हो सकती है लेकिन ऐसा नहीं हो रहा, जो चिन्ता का विषय है।

वृद्धावस्था : V.P. Sharma (2017)[4] वृद्धावस्था को एक ऐसी जटिल और काल क्रमिक प्रक्रिया माना जाता है जिसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पक्ष होते हैं और यह वृद्धावस्था भविष्य में प्रत्येक व्यक्ति को इससे गुजरना पड़ेगा। कोई भी धन, दौलत, पैसे सुख सुविधा, मेकअप, बालों की डाई, ब्युटी पार्लर कराने से हमेशा युवा नहीं रह सकता है। सबको वृद्ध होना पड़ेगा और यह अटल सत्य भी है। वृद्धों की प्रमुख समस्या समाज में घर परिवार में, सांमजस्य स्थापित नहीं होना है। वृद्ध लोगों की परिस्थिति एवं समस्याओं के अनेक कारण है। आधुनिकीकरण, औद्योगिकरण, आर्थिक समस्याऐं, वृद्ध माता पिता एवं वृद्ध लोागें के सामने मुख्य रूप से जीव, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याऐं प्रमख रूप से देखने को मिलती है–

निष्कर्ष : वर्तमान में दो या अधिक पीढ़ीयों के विचारों में भिन्नता रोक टोक, असामंजस्यता के उत्पन्न होने से संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं जिसके कारण वृद्ध लोगों की समस्याऐं बढ़ती जा रही है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि वृद्ध माता पिता एवं वृद्ध लोगों की प्रमुख समस्या, उनकी उचित देखभाल नहीं, करना, उचित मान सम्मान नहीं देना, आंखों से कम दिखाई देना, पौष्टिक आहार नहीं मिलने युवा पीढ़ी के द्वारा अच्छा व्यवहार नहीं करना, आर्थिक, सामाजिक, आदि अनेक कारण वृद्ध माता एवं वृद्ध लोगों की समस्या है।

संदर्भ :

1) V.P. Sharma (2005) Rural and Urban Sociology, Panchsheel Prakashan, Jaipur.

2) K.P. Kumaran (2010) Rural Tension in India, College Book, Depot. Jaipur.

3) M.L. Gupta & D.D. Sharma (2001) Indian Social Problem, Sahitya Bhawan Publication Bhawan, Printers, Agra.

4) V.P. Sharma (2017) Issues and Problems in Indian Society, Panchsheel Prakashan, Jaipur.